The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol 1, Issue 1 - 2017

शिक्षण व्यवहार में फ्लैण्डर्स की अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रणाली की प्रासंगिकता

अवधेश कुमार*

प्राचीन भारतीय इतिहास के पन्नों में जाकर देखें तो शिक्षण कार्य किया जाता रहा है इस शिक्षण कार्य में पुरुषों ने जहाँ कार्य किया वहीं महिलाओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई भारतीय ऋषि–मुनियों ने जंगलो में शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया वहीं महिलाओं ने उपाध्याया के रूप घर–घर में शिक्षण कार्य करके भारतीय समाज में चिराग रूपि शिक्षा को जलाने का प्रयास किया। इस प्रकार देखा जाय तो ये शिक्षण कार्य वैदिक काल से चलकर, मध्यकाल के समयों से गुजरते हुए आधुनिक समय में अपनो बैठ बना ली।

प्राचीन समय से लेकर कुछ समय पहले तक हमारी शिक्षा व्यवस्था शिक्षक केन्द्रित थी लेकिन सामकालिक समय में ये शिक्षा बाल केन्द्रित हो गयी यहीं से हमें शिक्षक के शिक्षण व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है। इस शिक्षण व्यवहार को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षाशास्त्रियों ने अनेक प्रकार के प्रयोग करके इसमें सुधार करने हेतु सुझाव प्रदान किये।

जैसे–मेंडले तथा मिजल (1958) द्वारा शाब्दिक तथा अशाब्दिक निरीक्षण द्वारा स्नातक शिक्षकों का अध्ययन।

डी0जी0 रायन (1960) शिक्षक विशेषताओं के स्वरूप का अध्ययन।

(1) रादूर स्टोन (1935) पदों का स्वरूप

(2) एच0एच0 एण्डरसन (1945,46) व्यवहार आलेख की पद्धति 1/डी0 अनुपात

इसी क्रम में विद्आल (1949), वेल्ज (1950) हपस (1959), नेड0ए0 फ्लैण्डर (1963) तथा अन्य शोधार्थियों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने इस शिक्षण व्यवहार को उल्लिखित करने का प्रयास किया।

शिक्षण व्यवहार उसे कहते हैं जिसकी उत्पत्ति प्रायः किसी प्राणी या जीव की अपने पर्यावरण के सन्दर्भ में अन्तर्क्रिया द्वारा होती है। शिक्षण व्यवहार शिक्षण की परिस्थिति में उत्पन्न विशिष्ट कार्यों, क्रियाओ तथा अधिगम के उद्देश्यो की प्राप्ति कराने हेतु नियोजित राक्रियाओं के उपयोग सम्बन्धी कौशल का बोध कराता है। जैसें– कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य करते समय विषय सामाग्री को प्रस्तुत करना, प्रश्न पुछना, व्याख्या करना, प्रदर्शन, निर्देशन तथा आदेश देना आदि अर्थात वे सभी व्यवहार, क्रिया–कलाप एवं अभिव्यक्ति जो कि शिक्षक द्वारा शैक्षणिक परिस्थिति में उत्पन्न या व्यक्त करता है उसे शिक्षण व्यवहार कहा जाता है।

अन्तः क्रिया विश्लेषण (Interaction Analysis) का अर्थ है– ऐसी प्रणाली जिसके द्वारा कक्षा–कक्ष मे घटने वाली घटनओ का व्यवस्थित तथा वस्तुनिष्ठ निरीक्षण कर वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है।

*शोध–छात्र, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय कोटवा, जमुनीपुर, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

ओवर महोदय के अनुसार, "क्रमबद्ध निरीक्षण प्रणाली वह उपयोगी साधन है, जिसके माध्यम से अधिगम की स्थितियों के चरों की अन्त: क्रिया को पहचानना, वर्गीकरण, मापन एवं अध्ययन किया जाता है। अर्थात कहा जा सकता है कि यह विशिष्ट शोध की क्रिया है, जिसकी सहायता से कक्षागत सभी क्रियाओं तथा व्यवहारों का निरीक्षण, अंकन तथा विश्लेषण किया जा सकता है।

लगभग 60–65 वर्ष से शिक्षाशास्त्री कक्षा व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए जिन कक्षा निरीक्षण प्रणालियों का उपयोग कर रहे थे उन्हे दो वर्गो में बॉटा जाता है।

कक्षा निरीक्षण प्रणाली

संकेत प्रणाली

श्रेणी / वर्ग प्रणाली

संकेत प्रणालियों मे शिक्षक के व्यवहारों की सूची दी जाती है। निरीक्षक, शिक्षक के उस व्यवहार पर निशान लगाता है जिसका प्रदर्शन कक्षा–कक्ष में होता है।

वर्ग / श्रेणी प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न व्यवहारों को सुविधा वर्गों / श्रेणियों में सम्पन्न होने के क्रम में लिखते जाते है।अर्थात कक्षा में शिक्षक द्वारा शिक्षण की प्रत्येक घटना को तीन या तीन से कम समयान्तराल पर अंकित किया जाता है। और इसे नोट करके देखा जाता है कि शिक्षक का शिक्षण व्यवहार किस वर्ग या श्रेणी में आता है।

परन्तु इस प्रणाली में सुधार करते हुए 1951 ई0 में मिनी सोटा यूनीवर्सिटी में नेड0 ए0 फ्लैण्डर ने शिक्षक में शिक्षण व्यवहार के अध्ययन के लिए दस वर्ग / श्रेणी प्रणाली की रचना की।

सन् 1959 ई0 में नेड ए0 फ्लैण्डर्स महोदय ने शाब्दिक व्यवहार जो कि कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत घटने वाली विभिन्न घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन किया है।इसे सुविधानुसार तीन भागो में विभाजित किया गया है।

1. शिक्षक कथन
2. छात्र कथन
3. मौन या विभ्रान्ति

शिक्षक कथन–कक्षा–शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा जो भी क्रियाए की जाती है उन्हें शिक्षक कथन के अन्तर्गत रखा जाता है। फ्लैण्डर महोदय ने इसे दो भागों मे विभाजित किया है।

1. प्रत्यक्ष वर्ग
2. अप्रत्यक्ष वर्ग

प्रत्यक्ष वर्ग के माध्यम से शिक्षण कार्य में शिक्षक प्रभुत्व जमाता है जबकि अप्रत्यक्ष वर्ग के माध्यम से अधिगम शिक्षण कार्य को आगे बढाता है।

अप्रत्यक्ष वर्ग को फ्लैण्डर महोदय ने 4 चार श्रेणियों में विभाजित किया है ।

1. विचार स्वीकृति–छात्र–छात्राओं की भावनाओं को सहज रूप से स्वीकार करना है, ये नाकारात्मक ,स्वीकारात्मक स्मरण तथा भविष्य कथन भी हो सकते है।
2. प्रशंसा या प्रोत्साहन–छात्र–छात्राओं को उनकी क्रिया के अनुसार प्रशंसा , प्रोत्साहन या पुनर्बलन प्रदान करना।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

3. छात्रो के विचारो का उपयोग– छात्र–छात्राओं के विचारों को स्वीकार करना विचारों को स्पष्ट करना तथा उनका उपयोग भी करना।
4. प्रश्न करना–शिक्षक छात्र–छात्राओ से तथ्यों सूचनाओं तथा विधियों एवं पाठ्य समाग्री से सम्बन्धित प्रश्न पूछता है।

फ्लैण्डर की अन्त: क्रियाविश्लेषण प्रणाली
FLANDER'S SYSTEM OF INTERJUCTION ANALYISIS

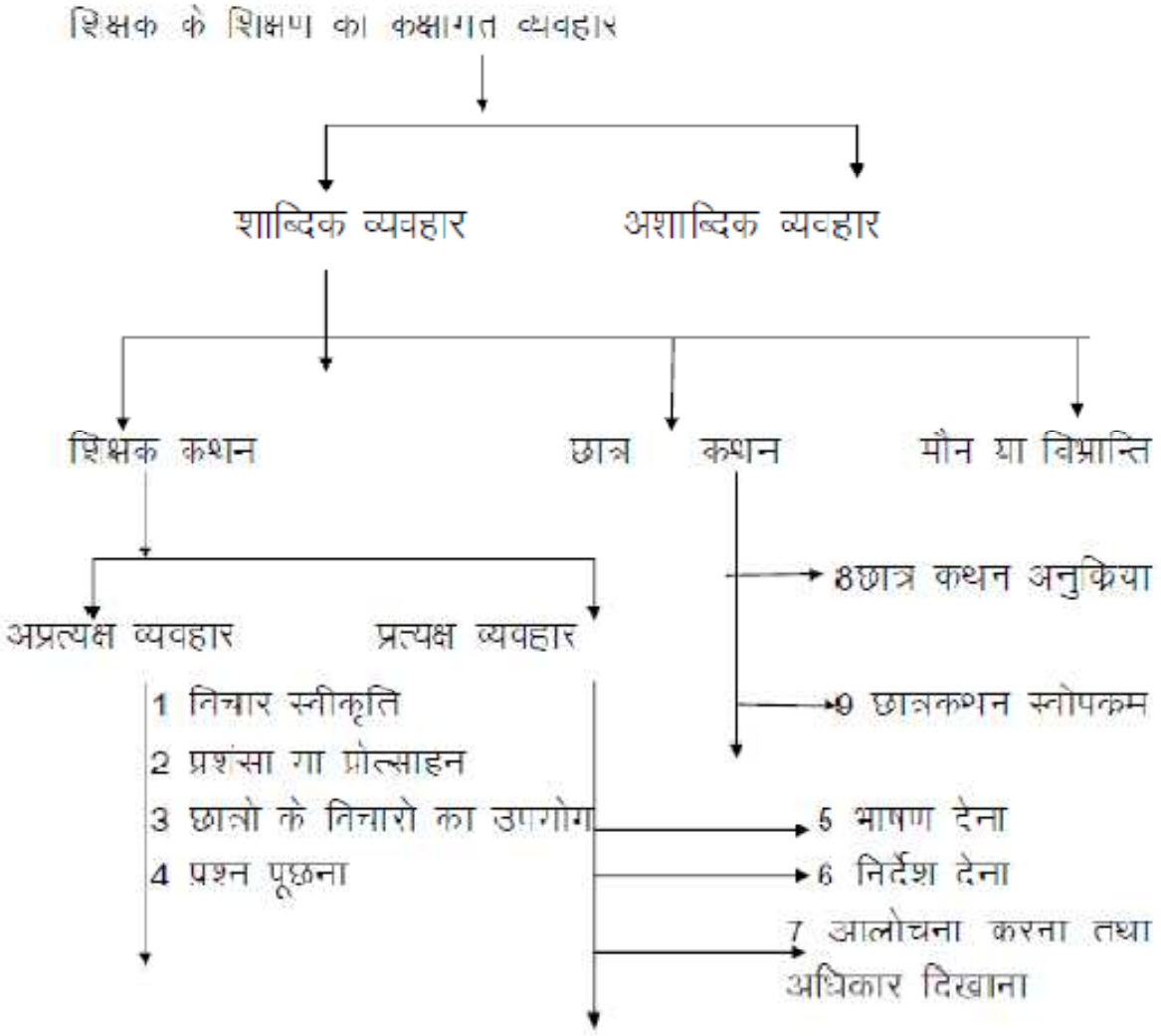

पलैण्डर महोदय ने प्रत्यक्ष व्यवहार को भी तीन भागों में विभाजित किया है।

1. भाषण देना– पाठ्य सामाग्री ,प्रकिया अपने विचार तथा तथ्य प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को
2. निर्देश देना– छात्र–छात्राओं को आवश्यक निर्देश प्रदान करना ।
3. आलोचना या अधिकार प्रदर्शन।

छात्र कथन –छात्र/छात्राओं द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान प्रदर्शित शाब्दिक व्यवहार क्रियाएं, अनुक्रियाएं इसके अन्तर्गत आते है।

फ्लैण्डर महोदय ने इसे दो भागो में विभाजित किया है।

1. **छात्र कथन अनुक्रिया**– शिक्षक की क्रिया निर्देश तथा प्रश्नों का छात्रों द्वारा उत्तर देना इसके अन्तर्गत आता है।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

2. **छात्र कथन स्वोपक्रम–** इसमें छात्र–छात्रा स्वयं वर्ता के लिए पहल करता है। वह प्रश्न पूछता है, स्पष्टीकरण मांगता है और अपने विचारों को प्रस्तुत करता है उसे अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की स्वतन्त्रता होती है।

मौन या विश्रान्ति कक्षा में कुछ समय के लिए सभी एक साथ बोलते हैं, जिससेकक्षा में अव्यवस्था हो जाती है, जिसमें किसी को कुछ भी समझ में नहीं आता अथवा कक्षा मौन हो जाती है।

अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रणाली की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

विश्व की शिक्षा व्यवस्था प्राचीन समय से अपनी निरन्तरता को बनाये हुए है, लेकिन विश्व समुदाय इसे किसी सीमा में बांध नही सका ये निरन्तर वायु वेग सेचलती रही फिर भी फ्लैण्डर महोदय ने शिक्षक के शिक्षण कार्य को अंको के माध्यम से इसे मली की माला में गुँथने का प्रयास किया और उसमें सफलता भी प्राप्त किये है।

इसकी आवश्यकता विश्व समुदाय को तो थी ही इसके साथ–साथ शिक्षक समुदाय के लिए अति आवश्यक था क्योंकि इसके मध्यम से शिक्षक भी अपने शिक्षण कार्य को एक कसौटी के माध्यम से अपने आपको व्यक्त करने तथा प्रभावशाली बनाने में समर्थ पाता है।

फ्लैण्डर महोदय ने कक्षा अन्तः क्रिया विश्लेषण के अन्तर्गत शिक्षक के शाब्दिक व्यवहार का निरीक्षण करने और सुधार लाने मे सहायता करने की वस्तुनिष्ठ विधि है इसी के तहत शिक्षकों का विश्लेषण तत्काल पृष्ठपोषण प्रदान करने, तथा सूक्ष्म शिक्षण का भी प्रयोग कुशलता के साथ किया गया है।

अंतः क्रिया विश्लेषण प्रणाली के माध्यम से कक्षा में सौहार्दपूर्ण, सामाजिक व संवेगात्मक वातावरण को मापने की एक अच्छी तकनीक है। इससे कक्षा में सहभागिता बढ़ाने, शिक्षक और छात्र सम्बन्ध को अच्छा बनाने, शिक्षण व्यवहार के सिद्धान्तो का प्रतिपादन करने, कक्षा की गतिविधियों का विश्वसनीय ढंग से पता करने तथा शिक्षक व्यवहार से सम्बन्धित शोध कार्यों में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार देखा जाए तो अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रणाली की आलोचना के साथ–साथ अनेक कमियों का भी उल्लेख किये है।

अन्ततः लेखन कर्ता का विचार है कि फ्लैण्डर की अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रणाली की कमियों को दर किनार करके देखा जाए तो किसी भी शिक्षक, छात्राध्यापक के शिक्षण कार्य को सुधारने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का एहसास कराता है तथा पुरे शिक्षक समुदाय को गौर्वान्वित भी करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. अग्रवाल जे0 सी0, शैक्षिक तकनीकी तथा प्रबन्ध के मूलतत्वश्री विनोद पुस्तक मन्दिर डॉ0 रांगेय राघव मार्ग, आगरा–2 पृष्ठ 208–213.

[2]. डा0 मालवीय राजीव, शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंधन शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स ''युनिवर्सिटी रोड, इला0 पृष्ठ–161–170.

[3]. सिंघल अनुपमा, कुलश्रेष्ठ एस0पी0, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार अग्रवाल पब्लिकेशन 28/1/5, ज्योति ब्लाक, संजय पैलेस, आगरा–2 पृष्ठ –255–267.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.